

The Promotion and Current Scenario of Regional Wood Art in Chitrakoot (चित्रकूट की आंचलिक काष्ठ कला का संबंधन एवं वर्तमान परिदृश्य)

Dhirendra Kumar^{a*}, Dr. Jai Shankar Mishra^b

^a Research Scholar, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Chitrakoot University, Satna, Madhya Pradesh

^b Associate Professor, Mahatma Gandhi Chitrakoot Gramodaya Chitrakoot University, Satna, Madhya Pradesh

^aEmail: dheerendrap96@gmail.com

Abstract

Surrounded by the Vindhya mountain ranges, Chitrakoot is an important center of Indian cultural and religious heritage, renowned for its historical and woodcraft and craft characteristics. The regional wood art of this region not only represents the identity of the local community, but its traditions also reflect religious beliefs and lifestyles. Since ancient times, wood carving, temple decorations, religious objects, and household items have been created using wood art in Chitrakoot. Currently, wood art is facing many challenges due to the emergence of modern technology-based products and the changing market. Despite the declining number of woodcut artists, lack of traditional knowledge, and economic insecurity, it remains alive in some areas, and local artists are making efforts to preserve it. The state government needs to provide it with a global platform through government schemes, handicraft fairs, training camps, and new technologies. Educational institutions and research scholars should also play an active role in documenting and promoting this tradition. Woodcut art (Vaktaj) is an ancient form of Indian craftsmanship. The earliest examples of woodcut art are believed to originate from China. Woodblock printing began in China in 220 BC. Regional woodcut art, which has been an integral part of the cultural, religious, and social identity of the Chitrakoot region, not only reflects the creativity of folk life but also vividly represents the traditions, beliefs, and outlook on life of rural society.

This makes it clear that Chitrakoot's woodcraft still holds immense potential, provided it receives proper preservation and promotion efforts. Currently, this art exists in a limited scope. The potential of Chitrakoot's local artisans and their traditional woodcraft skills should be encouraged.

विंध्य पर्वत श्रेणियों से घिरा चित्रकूट भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जिसे वह अपनी ऐतिहासिक एवं काष्ठ कलात्मक व शिल्प कला की विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र की आंचलिक काष्ठ कला न केवल स्थानीय समाज की पहचान के रूप में जानी जाती है। अपितु इसकी परंपरा धार्मिक आस्था एवं जीवन शैली को भी दिखाती है। चित्रकूट में प्राचीन काल से काष्ठ (लकड़ी) की नक्काशी, मंदिरों की साजसज्जा धार्मिक वस्तुएं एवं घरेलू उपयोग में आने वाली वस्तुएं काष्ठ कला के माध्यम से तैयार की जाती रही हैं। वर्तमान समय में काष्ठ कला आधुनिक तकनीक से निर्मित वस्तुओं एवं बदलते बाजार के कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। काष्ठ कलाकार की संख्या में कमी, पारंपरिक ज्ञान की कमी तथा आर्थिक असुरक्षा होने के बावजूद कुछ क्षेत्रों

में यह अभी जीवित है और स्थानीय कलाकारों द्वारा बचाने (सहेजने) के प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य सरकार द्वारा सरकारी योजनाएँ, हस्तशिल्प मेला, प्रशिक्षण शिविर व नई तकनीकियों के माध्यम से इसे वैश्विक मंच देने की जरूरत है। साथ ही शैक्षणिक संस्थानों एवं शोध छात्रों के द्वारा इस परंपरा को दस्तावेजीकरण कर प्रोत्साहित करने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। काष्ठ कला (वक्क तज) भारतीय शिल्प परंपरा की एक प्राचीन विधा है, काष्ठ कला का सर्वप्रथम उदाहरण चीन से माना जाता है। २२०।क में चीन में लकड़ी के ठप्पे बनाकर वुड ब्लॉक प्रिंटिंग मुद्रण प्रारंभ हुआ था। आंचलिक काष्ठ कला, जो चित्रकूट क्षेत्र की सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक पहचान का अभिन्न अंग रही है, यक कला न केवल लोक जीवन की रचनात्मकता को दर्शाती है, बल्कि ग्रामीण समाज की परंपराओं आस्थाओं और जीवन दृष्टि को जीवंत रूप में प्रस्तुत करती है।

इस से यह स्पष्ट होता है कि चित्रकूट की काष्ठ कला में अभी भी अपार संभावनाएँ हैं, बशर्ते उसे संरक्षण और संवर्धन के समुचित प्रयास मिले वर्तमान में यह काष्ठ कला सीमित दायरे में जीवित है। चित्रकूट के स्थानीय कारीगरों की क्षमता पारंपरिक काष्ठ शिल्प कौशल को प्रोत्साहित किया जाए।

Keywords: Wood Art, Religious, Historical Chitrakoot, Folk Craft, Venu Craft.

काष्ठ कला, धार्मिक, ऐतिहासिक चित्रकूट, लोकशिल्प, वेणु शिल्प

Received: 8/28/2025

Published: 9/02/2025

* Corresponding author.

चित्रकूट- संक्षिप्त परिचय

विंध्य पर्वत श्रेणियों घिरा चित्रकूट अपनी ऐतिहासिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्वता को सामहित किए हुए भारत देश के उत्तरप्रदेश के चित्रकूट जिले एवं मध्यप्रदेश के सतना जिले की सीमा पर स्थित एक ऐसा स्थान है जो अपनी प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। माना जाता है कि भगवान श्री राम अपने वनवास काल के दौरान चित्रकूट की पावन नगरी में लगभग बारह वर्षों का समय व्यतीत किए थे, चित्रकूट में अनेक धार्मिक स्थल हैं जो प्रभु श्री राम के अस्तित्व को समाहित किए हुए हैं। यहाँ के श्री कामदगिरी पर्वत की परिक्रमा करने पूरे भारत ही नहीं अपितु देश विदेश से भी लोड आते हैं।

चित्रकूट की कला संस्कृति की बात करें तो यहाँ हर प्रकार की कला संस्कृति के दर्शन होते हैं। स्वतंत्रता संग्राम में यहाँ के आदिवासी जनजातियों ने महत्वपूर्ण योगदान दिए हैं। आज यह क्षेत्र राजनैतिक आधार पर दो प्रदेशों उत्तरप्रदेश तथा मध्यप्रदेश में बँट गया है तथापि इसकी सांस्कृतिक परंपरा में अनूठा सामंजस्य देखा जा सकता है और कलात्मक गतिविधियों की विभिन्न धारा अनवरत रूप से प्रवाहमान हैं।

चित्रकूट के प्रमुख धार्मिक स्थल

रामघाट - रामघाट मंदाकिनी नदी के तट पर स्थित है। जहां श्री राम और माता सीता, लक्ष्मण समेत इस नदी में स्नान किया, जिससे इसकी महत्वता बढ़ जाती है। किवंदंती अनुसार यह वही घाट है जहां श्री राम ने भक्त गोस्वामी तुलसीदास को लक्ष्मण समेत दर्शन दिया था और उनसे तिलक लगवाया था। यह घाट श्रद्धालुओं के लिए स्थान व पूजन का प्रमुख है।

कामदगिरी पर्वत - इसकी परिक्रमा सच्चे मन से करने से मनोकामनाएं पूर्ण होती है इस पर्वत की पूजा भगवान श्री राम किया करते थे। इस पर्वत को चित्रकूट का हृदय कहा जाता है।

पर्णकुटी - मान्यता अनुरूप इसी स्थल पर भगवान राम ने अपनी पर्णकुटी बनाई थी और इसी स्थल पर वनवास काल का साढ़े ग्यारह वर्ष व्यतीत किया था। अंतः धार्मिक आस्था और दर्शन का वह एक महत्वपूर्ण केंद्र है।

अन्य - सती आँसूईया, राम सैय्या, भरतकूप, हनुमान धारा

चित्रकूट की कला एवं शिल्प का परिचय

कला भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ किसी क्षेत्र विशेष की संस्कृति का दर्पण है। हम अपनी अनुभूति व कल्पना को जिस माध्यम द्वारा व श्रोता के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

चित्रकूट न केवल धार्मिक दृष्टि से प्रसिद्ध है, बल्कि यहाँ की लोक कला और शिल्प कला परंपरा भी अपनी विशेष पहचान रखती है यहाँ की कला और शिल्पों में अध्यात्म लोक परंपरा, प्रकृति और रामायण कालीन प्रसंगों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है।

चित्रकूट की लोककला - चित्रकूट की लोक कला मुख्य रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों से प्रेरित है। यहाँ की चित्रकला, मूर्तिकला, लोक गीत, लोक नृत्य, कथा कहानी की परंपरा में स्थानीय लोग जीवन और रामायण के प्रसंगों का चित्रण होता है।

चित्रकूट की शिल्पकला दृष्टि चित्रकूट की शिल्प परंपरा में धार्मिक भावनाओं और लोक संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। यहाँ के शिल्पों में मिट्टी, लकड़ी और पत्थर का उपयोग प्रमुखता से होता है जिसे चित्रकूट का शिल्प देख कर पता लगाया जा सकता है।



लोककला और शिल्प में धार्मिक प्रभाव

चित्रकूट की अधिकांश कलाओं में धार्मिक कथाएं साधु सन्यासियों की जीवन शैली, मंदाकिनी नदी। कामदगिरी पर्वत और भगवान राम से जुड़ी घटनाओं का प्रभाव दिखाई देता है। यहाँ की कला आत्मा को अध्यात्म से जोड़ती है।

काष्ठ कला का आरंभ एवं विकास

काष्ठ अथवा लकड़ी की उपयोगिता मानव जीवन में अतिप्राचीन है। संस्कृत भाषा में इसे तरु शब्द से संबोधित किया गया है, जबकि अंग्रेजी में से वुड कहा जाता है। गृह निर्माण में इसका प्रयोग प्रारंभ से किया जा रहा है।

“wood was probably the most ancient building material for civil and royal architecture in India”.

लोक आकार का सृजन हमें लकड़ी के बने चैखट, खाट, घोंटूल, पालकी, दीप स्तम्भ, शहतीर, दरवाजे आदि से साथ मूर्तियों में देखने को मिलता है। कई शस्त्रों में भी लकड़ी की प्रतिमा संदर्भ आता है। काष्ठ (लकड़ी) को तराश कर आकर्षक रूप की आकृतियाँ प्रदान की जाती हैं और इस प्रकार की प्रतिमाये भी मंदिरों में स्थापित की जाती हैं। यथा- उड़ीशा में पुरी मंदिर में भगवान जगन्नाथ बालभद्र और सुभद्रा की काष्ठ प्रतिमाएं प्रसिद्ध हैं। काष्ठ में अलंकरण की परंपरा के साथ भारतीय पौराणिक कथा कर विभिन्न रूपों का उल्लेख मिलता है। कई देव देवताओं की मूर्तियाँ काष्ठ से निर्मित होती हैं। काष्ठ कला (वृवक ंतज) भारतीय शिल्प परंपरा की एक प्राचीन और समृद्ध विधा है। काष्ठ कला का सर्वप्रथम उदाहरण चीन का माना जाता है। 220 ंक वुड ब्लॉक चित्रण माना जाता है।

चित्रकूट की अन्य कला व शिल्प में काष्ठ कला

चित्रकूट क्षेत्र में निम्न प्रकार की लोक कला प्रचलित हैं।

भूमि चित्रण चौकपूरना

किसी भी लोग चित्र शैली में भित्ति चित्रण के पश्चात भूमि चित्रों का महत्वपूर्ण स्थान आता है! जो चित्रकूट शैली के अंतर्गत संस्कारों उत्सवों वह धार्मिक अनुष्ठानों में इन भूमि चित्रों का योगदान बड़ा ही आकर्षक व तर्कसंगत भाव से ओत-प्रोत है चित्रकूट में इन भूमि चित्रों को चौक पूर्ण (अरिपन) या अहिपन आदि शब्दों से संबोधित किया जाता है शब्द अरिपन का उद्भव संस्कृत में मूल शब्द 'आलिम्पन' से हुआ है ब्रह्म पुराण व पुराण में अरिपन के लिए भूमि शोभा का प्रयोग हुआ है अर्थात चौकपूर्ण का तात्पर्य उन तमाम मंडल आलेखन व आकृतियों से है जो भूमि के सजा सज्जा के लिए फर्श अथवा जमीन पर निर्मित की जाती है



चित्रकूट में कोई भी धार्मिक या संस्कृत अथवा मांगलिक उत्सव इसके निर्माण के बिना पूर्ण नहीं होता जो चित्रकूट क्षेत्र की संस्कृति एवं धार्मिक पहचान को दर्शाती है यह विशेष रूप से व्रत पूजा या पर्व के अवसरों पर चित्रकूट की कुलीन ब्राह्मण और कायस्थ महिलाओं द्वारा घर के आंगन चैखट या पूजा स्थलों पर बनाई जाती है इसे अरिपन 'माण्डना' या रंगोली की भांति भी देखा जा सकता है

खजूर पत्रीय शिल्प - चित्रकूट में खजूर पत्रीय शिल्प का इतिहास ज्यादा प्राचीन नहीं है। खजूर पत्रीय शिल्प का उपयोग मानव जीवन के उपयोग में आने वाली शिल्प बनाए जाते हैं। चित्रकूट में यह शिल्प आज एक गृह उद्योग का दर्जा प्राप्त कर चुकी है और ग्रामीण महिलाएं इससे धन प्राप्ति के साथ सम्मान को भी प्राप्त करने में सामर्थ्य होती है चित्रकूट के शिवरामपुर नगर की सैकड़ों महिलाएं इसे अपनी आय का साधन बन चुकी हैं कुछ स्वयं संस्थान इस कला को बढ़ावा हेतु आगे आए हैं और कलाकारों को संगठित कर नई दिशा देने का प्रयास कर रही है संक्षेप में यह कहा जा सकता है की चित्रकूट की इस शिल्प कला शैली के अंतर्गत सी की कार्य एक महत्वपूर्ण अंग है जो शैली विशेष की अपनी अनोखी पहचान है जो की चित्रों के माध्यम से देख सकते हैं जैसे - पंखा, चटाई, टोपी, कूचा या झाड़ू आदि चीजें बनाई जाती हैं।

वेणु शिल्प - चित्रकूट में वेणु शिल्प कोई विशेष स्थान नहीं रखता है। यहाँ वेणु शिल्प का दर्शन सामान्यतः रोजमर्रा में उपयोग में आने वाली वस्तुओं में ही होता है। यहाँ के बांस प्रायः पतले होते हैं स्वयं सेवी एवं अन्य संस्थानों से संबंध कुछ लोग अवश्य वेणु शिल्प की ओर आकर्षित हुए हैं और इस की तरफ कदम बढ़ाया।

महाबुलिया - लोक कला जो बुंदेलखंड के अंतर्गत खेली जाती है महाबुलिया का उल्लेख्य इतिहास में कहीं नहीं मिलता है और न ही इसको हर जगह मानते हैं। महाबुलिया एक ऐसी लोक कला है जिसे खेल खेल में पाँच से पंद्रह वर्ष की छोटी कन्याओं द्वारा खेली जाती है। महाबुलिया कुवार (अश्विन माह) जो त्योहार का महीना होता है। इसमें पितृ को आगमन होता है। पितृ पक्ष के प्रथम सप्ताह से पंद्रह दिनों तक खेली जाती है।



काष्ठ कला की विविध गतिविधियां

1. काष्ठ कला चित्रकूट क्षेत्र की पहचान के रूप में जानी जाती है। इसका उपयोग मुख्यतः दैनिक उपयोग की वस्तुओं में किया जाता है- जैसे घर निर्माण, खिलौने, औजार के हत्था में लिया जाता है।
2. चित्रकूट में काष्ठ का उपयोग मूर्ति निर्माण एवं हाथी गेट में देखा जा सकता है। हाथी गेट मंदिर के मुख्य दरवाजे के रूप में लगे होते हैं। इन दरवाजों में नक्काशी का सुंदर उदाहरण देखा जा सकता है। इस प्रकार के विशाल दरवाजों में पौराणिक, धार्मिक, प्रतीकों, कथाओं को काष्ठ में उकेरा जाने लगा।



3. काष्ठ कला को चित्रकूट में व्यवसाय और घरों में उपयोग होने वाली सजावटी वस्तुओं के रूप में लोकप्रियता अधिक देखी जा सकती है।
4. चित्रकूट के मझगवाँ तहसील में काष्ठ कला व शिल्प की उपयोगिता अत्यधिक प्रचलित है जहां जनजातीय लोगों द्वारा काष्ठ कला का उपयोग अपने वाद्ययंत्र बनाने में किया जाता है । जैसे- ढोलक, चैकी, खड़ाऊ, इत्यादि को काष्ठ (लकड़ी) से वाद्ययंत्र बनाए जाते हैं।
5. चित्रकूट क्षेत्र में विवाह एवं अन्य संस्कारों में प्रयोग होने वाली सामग्री भी काष्ठ से निर्मित की जाती है। चित्रकूट परिक्षेत्र की लोक परंपराओं त्योहारों और रेट रिवाजों में लकड़ी (काष्ठ) का विशेष उपयोग होता है।

समस्या एवं समाधान (विकास की)

समस्या

चित्रकूट परिक्षेत्र में काष्ठ कला की निम्न प्रकार की समस्या है-

1. जंगलों से लकड़ी काटने पर प्रतिबंध लगाना जिससे अच्छे किस्म की लकड़ी नहीं मिल पाती है।
2. युवा काष्ठ कलाकार सरकारी योजनाओं से अपरिचित रह जाना ।
3. सरकार द्वारा काष्ठ कला का कोई काष्ठ कार्यशला न आयोजित कराना जिससे युवा कलाकार पारंपरिक विविधता जानकारी नहीं रहती है।
4. लोक काष्ठ कारीगरों को उचित बाजार नहीं मिलता।
5. राज्य सरकार द्वारा कारीगरों (कलाकारों) के पास आधुनिक औजार और मशीनों की जानकारी व सुविधा नहीं रहती है। जिससे शिल्प निर्माण की गति काम हो जाती है।

समाधान (विकास)

1. सरकार द्वारा युवा कलाकारों को प्रशिक्षण कराना जिससे युवा कलाकार प्रशिक्षण के माध्यम से काष्ठ कला शिक्षा ले सकें और वह अपनी जीविका के लिए रोजगार से जुड़ सकें।
2. काष्ठ हस्तशिल्प विकास योजना अधिक सक्रिय रूप से लागू की जानी चाहिए।
3. काष्ठ कला के क्षेत्र में युवाओं को करियर बनाने का विकल्प के रूप में प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।
4. स्थानीय मेलों में हस्तशिल्प पर्यटन शिल्पों और उत्सवों में काष्ठ कला को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
5. साक्षरता डिजिटल ढंग से काष्ठ हस्तशिल्प कलाकार को सिखानी चाहिए जिससे वह हर व्यक्ति से जुड़ कर वह काष्ठ शिल्प आसानी से बेच सके।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में काष्ठ कला

आज के आधुनिक युग में तकनीकों के साथ कलाकार को दीवार सजावट से जोड़ कर देखा जाता रहा है तथा काष्ठ कला के आधुनिक रूप के खेलों ने देखी जा सकती है। जहां अब चित्रकूट के नए युवा कलाकार का ज्ञान और नई तकनीकी की सहायता से काष्ठ कला विकसित कर रहे हैं। काष्ठ कला में नई तकनीक आने से कलाकार को मेहनत काम करनी पड़ती है जिससे समय की बचत हो जाती है। काष्ठ कलाकृतियों में नई तकनीक के माध्यम से सुंदरता देखने को मिलती है।

उपादेयता - लोक कला सम्यक जानकारी व अध्ययन से उसके गहन सामाजिक संबंध और उपादेयता दृष्टिगोचर होती है। काष्ठ कला केवल सौन्दर्य पूर्ण सजावट की वस्तु नहीं है बल्कि इसका उपयोग सामाजिक, सांस्कृतिक,

धार्मिक मूर्तियों में और आर्थिक दृष्टि से भी गहरा महत्व है। इसकी उपादेयता को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

सामाजिक पहचान - कला क्षेत्र विशेष की पहचान के लिए होती है जिसमें सामाजिक पहचान निहित होती है। समाज के विभिन्न आयामों के साथ इसमें धर्म जाति व वर्ग की अपनी अपनी पहचान दृष्टि गोचर होती है।

सृजनशीलता - मानव जन्म से ही सृजनशील होता है।

सृजनशीलता आकृतियों को बाह सौंदर्य युक्त व लावणपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने के लिए काष्ठ चित्रों में अलंकरण की आवश्यकता होती है। आकृतियों की साज सज्जा व सुंदर अभिव्यंजना स्पष्ट करने के लिए अलंकरणों के विषय वस्तुओं का सहारा लिया जाता है यद्यपि चित्रकूट में काष्ठ सृजन का उद्देश्य संस्कारिक व धार्मिक है ना की अलंकारिक तथापि काष्ठ कला आकृतियों व बार्डर आदि को आवश्यकतानुसार उपयुक्त आलेखनों से सजाए संवारे जाने की परंपरा है आकृतियों में भिन्नता लाने के लिए भी इन अलंकरणों का प्रयोग किया जाता है इस शैली के अलंकरण के तत्व पूर्णता ग्रामीण लोक परिवेश का ही होता है इनमें प्रतीकात्मक अलंकरण के चित्र भी होते हैं जिसे आकृतियों के रिक्त स्थान में संयोजित किया जाता है अलंकरणों के प्रयोग से चित्रित आकृतियों में विषयगत वातावरण का संचार होता है और चित्र की भाव व्यक्ति सशक्त हो जाती है

ऐतिहासिक झलक - काष्ठ कला के द्वारा इतिहास को जाना जाता है। विभिन्न सभ्यता और संस्कृतियों की कहानी हमें ऐतिहासिक कलाकृतियों से प्राप्त होती है।

शैक्षणिक - यह कला छात्र छात्राओं को रचनात्मकता, धैर्य और हस्तशिल्प कौशल सिखाती है।

सांस्कृतिक पहचान - काष्ठ कला की चित्रकूट में सामाजिक और धार्मिक अभिव्यक्ति का एक माध्यम स्वरूप है जिससे लोकगीत, दीवारी नृत्य व त्योहारों में भी काष्ठ से बने मुखौटों व निम्न प्रकार की वस्तुएं प्रयुक्त होती हैं।

निष्कर्ष - काष्ठ कला आज व्यावसायिक युग में लोक और स्थानीय कला का भी अपने को पीछे नहीं रखा है। बल्कि यह आज के दौर में काष्ठ कला न केवल सुंदरता और परंपरा की परिचायक है रोजगार और रचनात्मकता का सशक्त माध्यम है जिससे व्यक्ति, समाज और सभी राष्ट्र लाभवन्तित होते हैं। काष्ठ कला भारत की सांस्कृतिक धरोहर की महत्वपूर्ण हिस्सा है। काष्ठ यह केवल सुंदर सजावटी कला नहीं है अतः इससे सामाजिक आस्था और धार्मिक और ऐतिहासिक भावनाओं का लगाव जुड़ा होता है। समय के साथ काष्ठ व शिल्प कला व तकनीकी से विकसित हुई है लेकिन आज भी यह परंपरागत मूल्यों को सँजोये हुए है। यदि सही दिशा में प्रयास किया जाए तो यह न केवल संरक्षित रह सकती है। अतः रोजगार और सांस्कृतिक समृद्धि का माध्यम भी बन सकती है। चित्रकूट की कला और शिल्प लोक संस्कृति, अध्यात्म और प्रकृति का सुंदर समन्वय है। यहाँ की कलाओं में रामायण की सांस्कृतिक विरासत और ग्रामीण जीवन की सादगी झलकती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. मिश्र जय शंकर, मूर्तिकला निर्माण एवं तकनीक, one align Publication, 2023

2. पांडे, बाला दत्त, लोक कला एवं शिल्प कुमाऊ, संस्कृति विभाग उत्तर प्रदेश, 1998
3. गुप्त, डॉ. अयोध्या प्रसाद, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, प्रथम संस्करण, 2018
4. मिश्र, डॉ. जय शंकर, मिथिला की लोककला शैली, one align Publication, 2023